गौतम बुद्ध एवं बौद्ध धर्म की उत्पत्ति के कारण पर प्रकाश डालें

गौतम बुद्ध और बौद्ध धर्म, दोनों ही प्राचीन भारत के सामाजिक, धार्मिक और दार्शनिक परिवर्तनों का परिणाम हैं। बौद्ध धर्म का उद्भव छठी शताब्दी ईसा पूर्व में हुआ, जब समाज में गहरी असमानताएँ, अंधविश्वास और जटिल कर्मकांड फैल चुके थे।

---

1. गौतम बुद्ध का जीवन-संबंधी संक्षेप

गौतम बुद्ध का जन्म लगभग 563 ई.पू. में लुंबिनी (नेपाल) में शाक्य कुल के राजा शुद्धोधन के घर हुआ। उनकी माता माया देवी थीं। युवावस्था में उन्हें जीवन के दुःख और नश्वरता का बोध हुआ, जिससे उन्होंने 29 वर्ष की आयु में गृह त्याग कर सत्य की खोज आरंभ की।
35 वर्ष की आयु में बोधगया में उन्हें ज्ञान प्राप्त हुआ और वे "बुद्ध" कहलाए। उन्होंने सारनाथ में प्रथम उपदेश दिया और अपना धर्म प्रचार आरंभ किया। 80 वर्ष की आयु में कुशीनगर में उनका महापरिनिर्वाण हुआ।

---

2. बौद्ध धर्म की उत्पत्ति के प्रमुख कारण

(क) सामाजिक कारण

उस समय समाज जाति-पाति, ऊँच-नीच और अस्पृश्यता से ग्रस्त था।

बौद्ध धर्म ने समानता, करुणा और अहिंसा का संदेश देकर आम जन को आकर्षित किया।

(ख) धार्मिक कारण

वैदिक धर्म अत्यधिक कर्मकांडप्रधान और बलिदान आधारित हो चुका था।

ब्राह्मणों का प्रभुत्व बढ़ गया था, जिससे आम जनता धर्म से दूर हो रही थी।

बुद्ध ने ईश्वरवाद, यज्ञ और बलिदान का विरोध किया तथा आत्मज्ञान और नैतिकता को धर्म का आधार बताया।

(ग) आर्थिक कारण

नगरीकरण और व्यापार के विकास के कारण वैश्य वर्ग उभर रहा था, जो सरल और नैतिक धर्म की खोज में था।

बौद्ध धर्म ने इस वर्ग को धार्मिक आश्रय प्रदान किया।

(घ) दार्शनिक कारण

उस युग में अनेक विचारधाराएँ जैसे सांख्य, जैन, आजीवक आदि प्रचलित थीं।

बुद्ध ने इन सबके मध्य एक मध्यम मार्ग (Middle Path) प्रस्तुत किया, जिसमें न अत्यधिक भोग था, न कठोर तपस्या।

---

3. परिणाम

बुद्ध के उपदेशों ने तत्कालीन समाज में एक नैतिक, तर्कसंगत और समानतामूलक धर्म की स्थापना की। बौद्ध धर्म ने न केवल भारत में, बल्कि श्रीलंका, म्यांमार, चीन, जापान, तिब्बत आदि देशों में भी गहरा प्रभाव डाला।

निष्कर्ष

गौतम बुद्ध के जीवन और उनके उपदेशों ने एक ऐसे धर्म को जन्म दिया जो मानवता, करुणा और नैतिक जीवन पर आधारित था। बौद्ध धर्म की उत्पत्ति केवल धार्मिक क्रांति नहीं थी, बल्कि यह सामाजिक सुधार और मानव चेतना का नया युग था।